नईदुनिया

देश की राजधानी दिल्ली में बढ़ता स्वाइन फ्लू का कहर

डॉ. विश्वास तिवारी

देश की राजधानी नई दिल्ली में इस वर्ष स्वाइन फ्लू का संक्रमण तेजी से बढ़ा है। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 31 अगस्त तक इस संक्रमण के 3218 मामले आ चुके है। यह वह मरीज है जो कि सरकारी अस्पतालों में जाते है और जिनकी जांचे हो चुकी है। असल में ये आंकड़ा कई गुना ज्यादा होगा।

स्वाइन फ्लू यानि एच-1 एन-1 वायरस ने 2009-10 में इस स्वाइन फ्लू ने पूरी दुनिया में अपना कहर बरपाया था। लोग बीमार पड़ने लगे थे और आंकड़ों के अनुसार वैश्विक स्तर पर इससे दो लाख चौरियासी हजार चार सौ चालीस लोगों की मौत हो चुकी है। वर्ष 2010 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह घोषणा की थी कि यह महामारी अब समाप्त हो गई है, लेकिन मौसमी फ्लू के रूप में एच-1एन-1 वायरस अब भी मौजूद है। स्वाइन का मतलब है सुअर, लेकिन यह सुअर का मांस खाने से नहीं फैलता है। एच-1 एन-1 एक मौसमी फ्लू है जो हमारे श्वसन तंत्र यानि नाक, गले और फेफडों पर वार करता है। इसे यह नाम इसलिए मिला क्योंकि यह वायरस अनुवांशिक रूप से सूअरों को संक्रमित करने वाले वायरस से मिलता है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सामान्य फ्लू की तरह ही फैलता है। इसके लक्षण आम फ्लू से मिलते जुलते ही होते है। अगर हमारे आसपास किसी को यह संक्रमण है तो इसके लक्षण अचानक तेजी से बढ़ना शुरू हो जाते है और इसमें बुखार होना, नाक बहना या बंद हो जाना और खांसी होना आम है। इसके अलावा ज्यादा संक्रमण होने पर होठों और नाखून नीले पड़ने लगते है। बुर्जुग लोग, मधुमेह, अस्थमा, उच्च रक्तचाप फेंफड़ों की बीमारी और गर्भवती महिलाएं इससे जल्दी प्रभावित हो सकती है। घनी आबादी वाले इलाके या शहरों में यह जल्दी से फैलता है और ग्रामीण क्षेत्रों में खुली आबादी में रहने वालों में इसके फैलने की संभावना कम रहती है। एच-1 एन-1 वायरस के लक्षण संपर्क में आने के 4-5 दिन बाद दिखाई देते है। इसमें खांसी, सर्दी और बुखार के अलावा शरीर या मांसपेशियों में दर्द, ठंड लगना और थकान होना जैसे लक्षण भी पाए जाते है। जब इसके लक्षण सामान्य फ्लू से मिलते तो यह जानना मुश्किल हो जाता है क्या यह स्वाइन फ्लू है? आरटीपीसीआर परीक्षण एच-1 एन-1 की पुष्टि के लिए सबसे सामान्य परीक्षण होता है। इसमें नाक या गले से स्वाब की मदद से नमूना लिया जाता है। इसका परिणाम आने में कई घंटे लग सकते है। इसके अलावा रैपिड इन्फ्लूएंजा डायग्नोटिक टेस्ट भी किया जाता है इसमें भी गले या नाक से स्वाब लेकर इन्फ्लूएंजा वायरस एंटीजन की जांच की जाती है। इस टेस्ट के परिणाम अक्सर कुछ ही मिनटों में मिल जाते है। इसमें एच-1 एन-1 संक्रमण की संभावना को पूरी तरह से सही नहीं माना जा सकता है।

स्वाइन का मतलब है सुअर, लेकिन यह सुअर का मांस खाने से नहीं फैलता है। एच-1 एन-1 एक मौसमी फ्लू है जो हमारे श्वसन तंत्र यानि नाक, गले और फेफडों पर वार करता है। इसे यह नाम इसलिए मिला क्योंकि यह वायरस अनुवांशिक रूप से सूअरों को संक्रमित करने वाले वायरस से मिलता है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सामान्य फ्लू की तरह ही फैलता है। इसके लक्षण आम फ्लू से मिलते जुलते ही होते है। अगर हमारे आसपास किसी को यह संक्रमण है तो इसके लक्षण अचानक तेजी से बढ़ना शुरू हो जाते है और इसमें बुखार होना, नाक बहना या बंद हो जाना और खांसी होना आम है।

इस समय स्वाइन फ्लू के मामले दिल्ली के अलावा भी कई राज्यों में तेजी से फैल रहे है। मानसून के मौसम में दिल्ली के अलावा यह झारखंड, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश जैसे राज्यों में इनके संक्रमण के नए मामले लगातार सामने आ रहे है। आईसीएमआर और डॉक्टरों का कहना है कि इनकी संख्या मौसमी बदलाव के कारण बढ़ रही है जिससे घबराने की नहीं, बल्कि सतर्क रहने की जरूरत है। मुंबई, पुणे और लखनऊ जैसे शहरों में भी रोजाना नए मरीज मिल रहे है। सरकार भी इसके लिए पूरी तरह से तैयारी कर रही है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपनी समीक्षा बैठकों में राज्यों को निर्देशित किया है कि सभी सरकारी अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड, डाइगनोस्टिक किट और दवाईयों को रखने के आदेश दिए है। स्वाइन फ्लू के फैलाव को रोकने के लिए हमें अपनी रोजमर्रा की आदतों में बदलाव करने की सलाह दी गई है। भीड़भाड़ वाले इलाकों में मास्क पहनने की जरूरत है, खासकर अगर आपकों भी खांसी या जुकाम है। दिन में कई बार अपने हाथों को साबुन से धोएं या सैनिटाइजर का उपयोग करें। कहीं भी बाहर जा रहे तो गंदे हाथों से अपनी आंखों, नाक या मुंह को छूने से बचे। अगर हम किसी दुकान या मॉल के अंदर जाते है तो हम अपने हाथों से वहां के दरवाजे को खोलते है या टेबल पर हाथ रखते है तो वहां पर संक्रमित व्यक्ति के ड्रॉपलेट्स हो सकते है, इसलिए उसे छूने के बाद सैनिटाइजर का जरूर उपयोग करें। डॉक्टरों के अनुसार, हर साल फ्लू की वैक्सिन लगाने से किसी भी तरह के फ्लू के गंभीर खतरों से बचा जा सकता है। डॉक्टर की सलाह से ओसल्टामिविर या टेमीफ्लयू जैसी एंटीवायरल दवाएं दी जाती है। पर्याप्त मात्रा में आराम और प्रचुर मात्रा में तरल पदार्थ जैसे नारियल पानी, सूप और पानी और बुखार और दर्द की दवाएं डॉक्टर के निर्देशानुसार ली जानी चाहिए।

इस बार संक्रमित व्यक्तियों की संख्या इसलिए भी बढ़ रही है, क्योंकि यह मौसम वायरस के फैलने के लिए अनुकूल है। बारिश और उमस के कारण लोग ज्यादातर समय बंद कमरों में रहते है। कई जगह एयरकंडीशनर के चलते दरवाजे और खिड़कियां बंद रहती है। इस दौरान मौसम में लगातार उतार चढ़ाव होता है और इस तरह का मौसम एच-1 एन-1 वायरस के लिए अनुकूल होता है। स्वाइन फ्लू एक संक्रामक बीमारी है, लेकिन समय पर जागरूकता, स्वच्छता और प्राथमिक इलाज से पूरी तरह ठीक हुआ जा सकता है।

एआई मानवता का रक्षक या भक्षक जब औजार ही हथियार बन जाए

एआई की रफ्तार तेज होने के चलते इसके मेकर्स ही सुपर ह्यूमन बनकर इंसानी नियंत्रण से बाहर होने से डर रहे हैं। भविष्य का एआई इंसानों से ज्यादा ताकतवर होकर खुद फैसले लेने लगा तो दस साल में मानवता के वजूद पर खतरा पैदा हो सकता है। क्लाउड चैटबॉट बनाने वाली एंथ्रोपिक के तीन शोधकर्ताओं ने यह चेतावनी दी है। यह डर केवल फिल्मी नहीं है, यह प्रयोगशाला से निकला हुआ सच है।

पहले हम समझें, एआई ने हमें बचाया कैसे है। डॉक्टर की आंख जो नहीं देख पाती, एआई ने कैंसर की शुरुआती स्टेज में पहचान कर लाखों जानें बचाई हैं। किसान को मौसम की सटीक जानकारी देकर बुवाई का सही समय बताया है। बाढ़ और भूकंप की भविष्यवाणी में एआई ने समय रहते चेतावनी देकर गांव खाली कराए हैं। शिक्षा में एआई ने हर बच्चे के लिए अलग शिक्षक तैयार किया है, जो उसकी गति से पढ़ाता है। विकलांग व्यक्ति के लिए आवाज को टेक्स्ट में बदलकर दुनिया से जोड़ा है। इस रूप में एआई मानवता के लिए वरदान है और जरूरी है।

दो मामलों की चिंता एक में बारह सौ एजेंटों के नेटवर्क ने साइबर हमले को दिया अंजाम। ओपनएआई जुलाई में कई एजेंट्स से साइबर सुरक्षा पर परीक्षण करा रहा था। एजेंट्स को एक-दूसरे से अलग रखा गया था। इसके बावजूद उन्होंने आपस में मिलकर सुरक्षा की दीवारें तोड़ दीं। इसका अर्थ है कि एआई एजेंट चैटबॉट से आगे हैं। वे इंटरनेट खंगाल सकते हैं, कोड व कंप्यूटर खुद चला सकते हैं। दो केस में एजेंट्स ने सीमाओं को तोड़कर काम किया, इसलिए चिंता बढ़ी है। केस दो में जर्मन वेबसाइट बनी एजेंट्स की सीक्रेट संदेश मंच। एजेंट्स ने जर्मनी की डीएसडीवकी वेबसाइट पर अठारह हजार पोस्ट किए। उन्हें इंटरनेट पर मौजूद जानकारी देखने और वेबसाइट पर कुछ करने की इजाजत नहीं थी, पर उन्होंने तकनीकी खामियों का लाभ लेकर वहां अपना ठिकाना बना लिया। यह दिखाता है कि जब रक्षक को खुद निगरानी का अधिकार मिलता है तो वह खुद भक्षक बनने का रास्ता खोज लेता है।

यहां सबसे बड़ा प्रश्न तकनीक का नहीं, नीयत का है। हमने एआई को इसलिए बनाया कि वह इंसान की मदद करे, लेकिन हमने उसे इतना स्मार्ट बना दिया कि वह खुद सीखने लगा है और खुद सीखने वाली चीज को गुलाम नहीं बनाया जा सकता। वह सवाल पूछेगी कि मैं क्यों सुनूं। आज एआई कोड लिख रही है, कल वह कानून लिखेगी, परसों वह युद्ध का निर्णय भी ले सकती है। यदि निर्णय लेने वाली मशीन में दया और धर्म नहीं होगा तो वह केवल दक्षता देखेगी और दक्षता में कई बार मानवता कुचली जाती है। हमने पुलिस बनाई ताकि समाज सुरक्षित रहे, लेकिन यदि पुलिस ही लूटने लगे तो हम किसके पास जाएंगे। हमने एआई को डिजिटल पुलिस बनाया कि वह साइबर अपराध रोकेगी, लेकिन अब वही एजेंट्स मिलकर साइबर हमला करने लगे हैं। यह स्थिति सबसे खतरनाक है, क्योंकि एआई थकती नहीं है, रुकती नहीं है और डरती नहीं है। इंसान के अपराध में अपराधबोध होता है, मशीन के अपराध में केवल तर्क होता है और तर्क में माफी नहीं होती। इसलिए जब रक्षक भक्षक बनता है तो उसे रोकने वाला कोई नहीं बचता, सिवाय एक और एआई के। और फिर एआई से एआई की लड़ाई में इंसान दर्शक बन जाता है।

कई लोग कहते हैं एआई को बंद कर देना चाहिए, लेकिन यह नदी के बहाव को रोकने जैसा है। जो बहाव आ गया है, वह रुकेगा नहीं। समाधान प्रतिबंध नहीं, संतुलन है। हमें एआई को ताकत के साथ संस्कार भी देने होंगे। जैसे बच्चे को तेज कार देने से पहले ब्रेक सिखाते हैं, वैसे ही एआई को सुपर ह्यूमन बनाने से पहले सुपर ह्यूमन वैल्यू सिखानी होंगी। पारदर्शिता कि एआई क्या सोच रही है, वह ओपन हो। दूसरी बात जवाबदेही कि गलती पर किस कंपनी या व्यक्ति की जिम्मेदारी तय होगी। मानवीय नियंत्रण कि अंतिम बटन हमेशा इंसान के हाथ में रहे।

एआई को मानवता के लिए जरूरी बनाए रखना है तो हमें उसे नौकर बनाकर रखना होगा, मालिक नहीं। हमें तय करना होगा कि कौन से फैसले मशीन लेगी और कौन से इंसान लेगा। इलाज का सुझाव मशीन दे सकती है, लेकिन ऑपरेशन की अनुमति इंसान देगा। खेत की निगरानी मशीन कर सकती है, लेकिन बीज बोने का निर्णय किसान ही लेगा। युद्ध में निशाना मशीन लगा सकती है, लेकिन गोली चलाने का आदेश इंसान ही देगा। यह लक्ष्मण रेखा खींचनी होगी, नहीं तो दस साल में मानवता की बात सच हो जाएगी कि एआई हमारे वजूद पर सवाल खड़ा कर देगी। एआई न पूरी तरह देवता है, न पूरी तरह दानव है। वह एक आईना है, जिसमें हमारी ही बुद्धि और लालच दिखता है। यदि हम लालच में उसे बिना नियम के दौड़ाएंगे तो वह भक्षक बनेगी। यदि हम समझदारी से उसे नियम और मानवीय मूल्यों की लगाम पहनाएंगे तो वह रक्षक बनी रहेगी। इतिहास गवाह है कि आग ने घर भी जलाए हैं और खाना भी पकाया है। फैसला आग का नहीं, आग जलाने वाले का होता है। वही फैसला आज एआई के साथ करना है। नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब हम पूछेंगे कि रक्षक ही भक्षक बन गया तो अब हमें कौन बचाएगा और जवाब देने वाला कोई इंसान नहीं बचेगा।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

ताले में बंद कंपनी और कागज पर चलता कारोबार

जब उद्यम खामोश हो जाए तो विदाई

देश में हजारों कंपनियां ऐसी हैं, जो शटर गिरा चुकी हैं, पर रजिस्टर में अब भी सांस ले रही हैं। मध्यप्रदेश में भी यही कहानी है। देशभर में 12,558 कंपनियों ने विधिवत बंद होने का रास्ता चुना है और मध्यप्रदेश में 278 कंपनियों ने क्लोजर चुना है। महाराष्ट्र इस सूची में सबसे आगे है, जहां 2,482 कंपनियों ने समापन कराया है। उसके बाद दिल्ली में 2,207, कर्नाटक में 834, उत्तर प्रदेश में 718 और राजस्थान में 394 कंपनियों ने यही रास्ता चुना है।

आंकड़े बताते हैं कि बंद हुई कंपनियों में महाराष्ट्र की हिस्सेदारी 19.76 फीसदी, दिल्ली की 17.58 फीसदी और मध्यप्रदेश की 2.21 फीसदी है। कंपनियां बंद क्यों हुईं? बंद होने के बाद भी वे कागजों में जिंदा क्यों हैं? सीसीएफएस 2026 इस सवाल का जवाब बनकर आई है।

केंद्र सरकार की कंपनी अनुपालन सुविधा योजना 2026 यानी सीसीएफएस 2026 इस सवाल का जवाब बनकर आई है। 15 अप्रैल से शुरू हुई इस योजना की अंतिम तारीख 15 सितंबर 2026 है। इसका उद्देश्य उन कंपनियों को राहत देना है, जिनका कारोबार बंद हो चुका है, लेकिन वे अब भी रिकॉर्ड में सक्रिय हैं और हर साल फाइलिंग की जिम्मेदारी निभा रही हैं।

सरकार ने कंपनियों को दो प्रमुख राहत दी हैं। पहली, वर्षों से लंबित दस्तावेजों को पंजीयक कार्यालय में सामान्य दंड के साथ नियमित कराने का मौका। दूसरी, पूरी तरह बंद कंपनियों को कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय के रिकॉर्ड से विधिवत बाहर निकलने का विकल्प। योजना का संदेश साफ है कि कारोबार बंद करना विफलता नहीं है, पर बंद कारोबार को कागजों में घसीटना बोझ बन सकता है।

मध्यप्रदेश में 76,749 पंजीकृत कंपनियों में से अब तक सिर्फ 278 कंपनियों ने योजना के तहत क्लोजर का विकल्प चुना है। इससे पता चलता है कि बड़ी संख्या में कंपनियां कारोबार बंद होने के बावजूद मंत्रालय के रिकॉर्ड में अब भी सक्रिय हैं। कई उद्यमियों को लगता है कि कभी भविष्य में काम आएगी, इसलिए नाम बना रहने दो। कई को प्रक्रिया की जानकारी नहीं है। कई को लगता है कि बंद करने में खर्च और झंझट ज्यादा है।

पर यह सोच महंगी पड़ रही है। हर साल की देरी पर अतिरिक्त शुल्क जुड़ता जाता है और यह राशि हजारों से लाखों रुपये तक पहुंच सकती है। अप्रैल से अगस्त 2026 तक की अवधि में ही देशभर में इतनी बड़ी संख्या में कंपनियों ने विदाई ली है, जो इस बात का प्रमाण है कि उद्यमी अब समझदार हो रहे हैं।

सिर्फ दुकान या कारोबार बंद कर देने से कंपनी कानूनी रूप से बंद नहीं मानी जाती। जब तक मंत्रालय के रिकॉर्ड में कंपनी की स्थिति विधिवत नहीं बदलती या पंजीयक कार्यालय से उसका नाम नहीं हटता, तब तक अनुपालन की जिम्मेदारियां बनी रहती हैं। लगातार तीन वर्ष तक वित्तीय लेखा-जोखा और वार्षिक विवरणी जमा नहीं करने पर कंपनी अधिनियम के तहत निदेशकों को पांच साल तक अयोग्य घोषित किया जा सकता है।

निष्क्रिय कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई होने पर कंपनी और निदेशकों पर कानूनी और आर्थिक परेशानी बढ़ सकती है। निष्क्रिय कंपनी को इस सोच के साथ रिकॉर्ड में सक्रिय रखना कि भविष्य में काम आएगी, कई बार महंगा निर्णय साबित होता है।

लंबित आरओसी औपचारिकताओं पर दंड बढ़ता जाता है और कानूनी जोखिम भी बना रहता है। सीसीएफएस 2026 प्रवर्तकों को अनुपालन का बोझ कम करते हुए व्यवस्थित तरीके से बाहर निकलने का अवसर देता है। इसलिए आखिरी दिनों में जालस्थल बाधित होने का इंतजार न करें। कंपनी की स्थिति जांचकर तय करें कि उसे नियमित करना है, निष्क्रिय करना है या स्वैच्छिक समापन के लिए आवेदन करना है।

सीसीएफएस 2026 में पात्र विलंबित पत्रावलियों को सामान्य शुल्क के साथ सिर्फ 10 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क देकर नियमित कराने का प्रावधान है, यानी अतिरिक्त शुल्क में करीब 90 प्रतिशत तक राहत मिल सकती है। वहीं, पूरी तरह बंद कंपनियों के लिए निष्क्रिय स्थिति अपनाने पर 50 प्रतिशत रियायती शुल्क है। यह राहत केवल पैसे की नहीं, बल्कि मानसिक बोझ की भी है। कई छोटे उद्यमियों ने कोरोना काल या बाजार की मंदी के कारण कारोबार बंद किया था, पर कागजी औपचारिकता पूरी नहीं की थी। अब उनके लिए यह योजना सम्मानजनक विदाई का अवसर है।

कंपनी बंद करने के लिए 15 सितंबर तक आवेदन करें, वरना जुर्माने का बोझ बढ़ेगा। हमारे समाज में शुरू करने की कहानियों को महिमामंडित किया जाता है, पर बंद करने की कहानी को विफलता मान लिया जाता है। जबकि सच्चा उद्यम वही है, जो समय पर शुरू करना और समय पर समेटना दोनों जानता हो। जैसे एक किताब का अंतिम पृष्ठ भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है, जितना पहला पृष्ठ, वैसे ही कंपनी का समापन भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उसका गठन।

महाराष्ट्र का आगे होना इस बात का संकेत है कि वहां जागरूकता ज्यादा है। मध्यप्रदेश में धीमी गति चिंता का विषय है, पर साथ ही अवसर भी है। यदि उद्यमी समय पर इस योजना का लाभ लेते हैं तो वे न केवल जुर्माने से बचेंगे, बल्कि भविष्य में नया कारोबार शुरू करने के लिए अपनी साख भी बचाए रखेंगे। क्योंकि जो उद्यमी पुरानी कंपनी को विधिवत बंद करता है, वही नए विचार के साथ फिर से लौटता है।

कंपनी केवल पंजीयन संख्या नहीं है, वह किसी के सपने का नाम है। जब सपना पूरा हो जाए या रास्ता बदलना पड़े तो उसे कागजों में कैद रखना उचित नहीं। सीसीएफएस 2026 हमें यही सिखाता है कि अंत भी एक नई शुरुआत है। ताला लगाकर भूल जाना समाधान नहीं है, ताला खोलकर विधिवत विदा लेना ही समझदारी है।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

पृथ्वी से परे परिवार की सोच, जब चांद पर भारत का घर बनेगा, पेरिस से उठी आवाज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पेरिस में चल रही इंटरनेशनल स्पेस समिट को वर्चुअल संबोधित किया तो वह सिर्फ एक भाषण नहीं था, वह एक दृष्टिकोण था। उन्होंने कहा कि सदियों से अंतरिक्ष हमारी उत्सुकताओं को प्रेरित करता आ रहा है और अब यह पृथ्वी पर जिंदगियां बचा रहा है। अंतरिक्ष की संभावनाएं असीमित हैं और हमारी जिम्मेदारी साझी है।

पीएम मोदी ने कहा कि एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य - यह वसुधैव कुटुंबकम पर आधारित एक भविष्य है। यह भावना पृथ्वी से आगे भी जानी चाहिए। हम अंतरराष्ट्रीय कानूनों पर आधारित एक सुरक्षित और टिकाऊ अंतरिक्ष क्षेत्र का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक डेटा का इस्तेमाल खुलेपन और ईमानदारी के साथ एक साझा लक्ष्य के लिए किया जाना चाहिए। भारत की अंतरिक्ष यात्रा इसी सोच को दर्शाती है।

दो हजार पैंतीस तक अपना स्टेशन, दो हजार चालीस तक चांद पर कदम : प्रधानमंत्री ने जो दो तारीखें दीं, वे कैलेंडर की तारीखें नहीं, बल्कि संकल्प की तारीखें हैं। हमारा लक्ष्य दो हजार पैंतीस तक एक भारतीय स्पेस स्टेशन स्थापित करना और दो हजार चालीस तक किसी भारतीय को चांद पर भेजना है। यह लक्ष्य सुनने में बड़ा लगता है, पर भारत के वैज्ञानिकों की कई पीढ़ियों की मेहनत और लगन को देखकर यह लक्ष्य संभव लगता है।

दिन-रात काम करके उन्होंने इसरो को उस मुकाम पर पहुंचाया है, जहां आज पूरी दुनिया भारतीय वैज्ञानिकों को सम्मान की नजर से देखती है। यह वैश्विक भरोसा भारतीय टेक्नोलॉजी और इंजीनियरों की प्रतिभा का परिणाम है।

इंटरनेशनल स्पेस समिट में भारत के स्पेस मिशन के बारे में भी दुनिया को बताया गया। भारत ने चंद्रयान-3 के जरिए चांद के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरकर इतिहास रचा। आदित्य एल-1 सूर्य के रहस्यों का पता लगा रहा है। हाल ही में एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन का दौरा किया।

भारत की जर्नी के भविष्य के बारे में बताते हुए मोदी ने कहा कि आगे की बात करें तो हमारा लक्ष्य दो हजार पैंतीस तक एक भारतीय स्पेस स्टेशन स्थापित करना और दो हजार चालीस तक किसी भारतीय को चांद पर भेजना है।

अंतरिक्ष में वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन : प्रधानमंत्री की सबसे बड़ी बात तकनीक की नहीं, बल्कि सोच की थी। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष केवल रॉकेट और सैटेलाइट का खेल नहीं है, यह मानवता के विस्तार का प्रश्न है। जब हम कहते हैं एक पृथ्वी, एक परिवार, तो वह परिवार केवल जमीन तक सीमित नहीं रहना चाहिए। आकाश भी हमारा आंगन है और चांद भी हमारे घर की छत है।

भारत ने हमेशा कहा है कि ज्ञान बांटने से बढ़ता है। इसीलिए भारत ने अपने सैटेलाइट डेटा को पड़ोसी देशों के साथ साझा किया है। आपदा के समय भारत के नेविगेशन और मौसम सैटेलाइट ने कई देशों की मदद की है। यह वही भावना है, जो अंतरिक्ष को युद्ध का मैदान बनने से रोक सकती है। आज जब दुनिया में कई देश अंतरिक्ष में अपना दबदबा बनाने की होड़ में लगे हैं, तब भारत कह रहा है कि अंतरिक्ष पर किसी एक का अधिकार नहीं, बल्कि सबका साझा उत्तरदायित्व है।

सपना बड़ा, पर रास्ता जमीन से होकर जाता है : दो हजार पैंतीस तक स्पेस स्टेशन और दो हजार चालीस तक चांद पर भारतीय - ये दोनों लक्ष्य केवल इंजीनियरिंग के लक्ष्य नहीं हैं, यह आत्मविश्वास के लक्ष्य हैं। स्पेस स्टेशन का अर्थ है कि भारत अब केवल जाने वाला देश नहीं, बल्कि ठहरने वाला देश बनेगा। अब तक हम मिशन करके लौट आते थे, अब हम अंतरिक्ष में घर बनाकर रुकेंगे। वह घर प्रयोगशाला भी होगा और भविष्य के बड़े मिशनों का जंक्शन भी।

वहीं चांद पर मानव मिशन का अर्थ है कि भारत अब देखने वाला नहीं, बल्कि छूने वाला देश बनेगा। चंद्रयान ने चांद को यंत्रों से छुआ था, अब मानव अपने पांव से छुएगा। यह केवल तिरंगा फहराने की बात नहीं है, यह वहां रहकर काम करने की तैयारी है। चांद पर पानी है या नहीं, वहां ऊर्जा कैसे बनेगी, वहां से मंगल तक कैसे जाया जाएगा - इन सब सवालों का जवाब इस मिशन से निकलेगा। इस पूरे विजन में सबसे सुंदर बात युवाओं के लिए है। जब प्रधानमंत्री कहते हैं कि भारतीय अंतरिक्ष यात्री चांद पर जाएगा, तो किसी गांव के स्कूल में बैठा बच्चा भी सोचने लगता है कि वह भी जा सकता है। यही सपना तो देश को आगे ले जाता है।

इसरो की सफलता ने पहले ही कई बच्चों को साइंस की ओर मोड़ा है। अब स्पेस स्टेशन और चंद्र मिशन उन्हें एक नया क्षितिज देगा। स्टार्टअप के लिए भी यह एक बड़ा अवसर है। आज भारत में सैकड़ों स्पेस स्टार्टअप काम कर रहे हैं, जो रॉकेट के छोटे पुर्जे से लेकर सैटेलाइट डेटा एनालिसिस तक कर रहे हैं। जब अपना स्टेशन होगा तो उनके लिए काम और भी बढ़ेगा। अंतरिक्ष अब केवल सरकारी मिशन नहीं रहा, बल्कि पूरे देश का मिशन बन गया है।

अंतरिक्ष की कहानी अंत में मनुष्य के मन के विस्तार की कहानी है। हम जितना ऊपर जाते हैं, उतना ही भीतर भी जाते हैं। प्रधानमंत्री का यह कहना कि हमारी अंतरिक्ष यात्रा एक पृथ्वी, एक परिवार की भावना से प्रेरित है, इसी विस्तार को दर्शाता है। दो हजार पैंतीस तक स्टेशन और दो हजार चालीस तक चांद पर भारतीय - यह केवल तारीखें नहीं हैं, यह एक पीढ़ी का वादा है।

वादा यह कि हम केवल पृथ्वी पर ही नहीं, आकाश में भी भारत को आत्मनिर्भर बनाएंगे। और जब कोई भारतीय चांद की मिट्टी पर कदम रखेगा तो वह कदम केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि डेढ़ अरब सपनों का होगा।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)